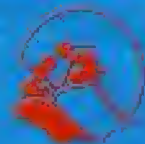


तालाब के मज़े



पढ़ना है समझना



प्रथम संस्करण : अक्टूबर 2008 कार्तिक 1930

द्वितीय संस्करण : दिसंबर 2009 पौष 1931

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2008

PD 10T NSY

पुस्तकमाला निर्माण समिति

कंचन मेहता, कृष्ण कुमार, ज्योति सेठी, दुलदुल विश्वास, मुकेश मालवीय,
राधिका मेनन, सौमिली शर्मा, लता पाण्डे, स्वाति जमौ, सारिका चौधरी,
सोपा कुमारी, सोनिका कौशिक, सुनील सुवत

सदस्य-समन्वयक - लीताका गुप्ता

चित्रांकन - कौतिका एस् नकुला

सम्पादक तथा आवरण - निधि यादव

डि.टी.पी. ऑथरिटर - जयराज गुप्ता, अंशुल गुप्त

आभार ज्ञापन

प्रोफेसर कृष्ण कुमार, निदेशक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
नई दिल्ली; प्रोफेसर कमुधा कामथ, संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी
संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर के. के.
चौधरी, विभागाध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर रामचन्द्र जामा, विभागाध्यक्ष, भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली; प्रोफेसर मंगुला माथुर, अध्यक्ष, रीडिंग
कमिटीमेंबर सेल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय समीक्षा समिति

डी अशोक माथुरजी, अध्यक्ष, पूर्ण कुलपति, महत्वा गांधी ओपेनस्ट्रीट हिंदी
विश्वविद्यालय, बर्सा; प्रोफेसर फरीदा अब्दुल्ला खान, विभागाध्यक्ष, शैक्षिक अभ्ययन
विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली; डॉ. अपूर्वचन्द, रीडर, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; डॉ. शबनम मिन्हा, सी.ई.ओ., आई.एल. एवं एफ.एल,
मुंबई; सुश्री नुसहत हसन, निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली; श्री रोहित धनकर,
निदेशक, दिवंगर, जयपुर।

80 सी.एस.एस. गैर पार मुद्रित

प्रकाशन विभाग में संचित, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, डी अरविन्द मार्ग,
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा फेब्रुवारी प्रिंटिंग प्रेस, डी-25, इंडस्ट्रियल कॉलोनी, साइट-ए,
मथुरा 281004 द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-898-0 (बन्धन-मैट)

978-81-7450-881-2

बरखा क्रमिक पुस्तकमाला पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के लिए है। इसका उद्देश्य बच्चों को 'सपना के साथ' स्वयं पढ़ने के मौके देना है। 'बरखा' की कहानियाँ चार स्तरों और पाँच कथावस्तुओं में विस्तारित हैं। 'बरखा' बच्चों को स्वयं की खुशी के लिए पढ़ने और स्थायी पाठक बनने में मदद करेगी। बच्चों को रोजमर्रा की छोटी-छोटी घटनाएँ कहानियों जैसी रोचक लगती हैं, इसलिए 'बरखा' की सभी कहानियाँ दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित हैं। 'बरखा' पुस्तकमाला का उद्देश्य यह भी है कि छोटे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रचुर मात्रा में किताबें मिलें। 'बरखा' से पढ़ना सीखने और स्थायी पाठक बनने के साथ-साथ बच्चों की पाठ्यचर्या के दरेक क्षेत्र में संज्ञानात्मक लाभ मिलेंगे। शिक्षक 'बरखा' को हमेशा कक्षा में ऐसे स्थान पर रखें जहाँ से बच्चे आसानी से किताबें उठा सकें।

प्रतिलिपि सुरक्षित

प्रकाशक की पूर्वेक्षणपूर्ति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापा या इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, प्रोटोग्राफिकी, फोटोकॉपी, अन्य किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संश्लेषण अथवा प्रसारण वर्जित है।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

- पदवी रोड, केरला, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-261052708
- 10A, 10B फ़ीट रोड, इन्फो टेकपार्क, कोन्कोर्ड, बंगलूरु 560 095 फ़ोन : 080-26725740
- नववीरन टावर भवन, डाकघर एकडोलार, जयपुर 302 014 फ़ोन : 079-27541846
- सी.एस.एस.डी. कैंपस, लिफ्ट: पार्कला बस स्टॉप पॉस्टाई, कोलकाता 700 134 फ़ोन : 033-25570454
- गी.एस.एस.डी. कॉम्प्लेक्स, मालीगान, मुंबई 400 021 फ़ोन : 022-26748609

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग : डॉ. राजकुमार मुख्तार
मुख्य संपादक : जयराज गुप्ता मुख्तार उपाध्यक्ष अधिकारी : शिव कुमार
मुख्य व्यापक अधिकारी : गौरव गौतमी

तालाब के मजे



काजल



माधव



काजल और माधव के गाँव में एक तालाब था।
दोनों तालाब पर रोज़ खेलने जाते थे।
उन्हें तालाब का पानी बहुत अच्छा लगता था।



एक दिन वे दोपहर को तालाब पर पहुँचे।
वहाँ बहुत सारे बगुले आए हुए थे।
तालाब सफ़ेद बगुलों से भरा हुआ था।



काजल और माधव इतने सारे बगुले देखकर खुश हो गए।
दोनों कूद-कूद कर बगुलों के बीच भागे।
दोनों ने बगुलों को पकड़ने की कोशिश भी की।



अगले दिन मोनी भी उनके साथ तालाब पर आ गई।
मोनी बगुलों पर भौंकने लगी।
काजल ने उसको प्यार से चुप कराने की कोशिश की।



लेकिन मोनी भौंकती ही रही।
वह दौड़कर बगुलों पर झपटी।
काजल ने उसे गोद में उठा लिया।



माधव और काजल उसको घर छोड़ने चल दिए।
तालाब के उस तरफ़ उन्हें कुछ घोंसले दिखे।
बगुलों ने तालाब के किनारे के पेड़ों पर घोंसले बनाए थे।



घोंसलों में तिनके, घास और पंख लगे हुए थे।
बगुलों के घोंसलों में अंडे भी थे।
काजल और माधव दूर से अंडों को देखते रहे।



दोनों रोज़ अंडों को देखने लगे।
हर एक घोंसले में तीन या चार अंडे थे।
अंडे हल्के नीले रंग के और छोटे-बड़े थे।



थोड़े दिनों बाद कुछ अंडों का रंग मटमैला हो गया।
उनमें से छोटे-छोटे बगुले निकल आए।
छोटे बगुले आवाज़ निकालते और पंख फड़फड़ाते थे।



बगुले अपनी चोंच में उनके लिए खाना लेकर आते।
वे बच्चों की चोंच में खाना डालते थे।
काजल और माधव को यह देखने में मज़ा आता था।



छोटे बगुले अब घोंसलों से बाहर भी आते थे।
तालाब के किनारे खूब सारे छोटे-छोटे बगुले दिखने लगे।
काजल और माधव छोटे बगुलों के पीछे भागते।



धीरे-धीरे छोटे बगुले बड़े होने लगे।
वे बड़े बगुलों के साथ तालाब में भी बैठने लगे।
वे तालाब में मछली और मेंढक भी पकड़ने लगे थे।



14

एक दिन सारे बगुले वापस अपने घर चले गए।
काजल और माधव ने सबको उड़कर जाते हुए देखा।
उन्हें पता था कि बगुले अगले साल फिर आएँगे।

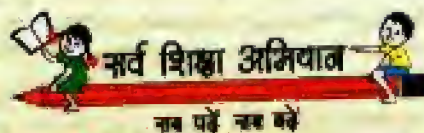


उस दिन मोनी फिर तालाब पर आ गई।
काजल ने उसे भगाया नहीं।
मोनी उन दोनों के साथ ही घूमती रही।

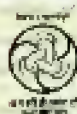


तभी उनकी नज़र तालाब में नहाती भैंसों पर गई।
काजल और माधव भैंसों पर जाकर बैठ गए।
दोनों ने भैंसों की पीठ पर, चोंक से अपना नाम भी लिखा।

- ★ स्तर 1
- ★ स्तर 2
- ★ स्तर 3
- ★ स्तर 4



2080



रु. 10.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-81-7450-898-0 (बॉन्ड-सैट)
978-81-7450-881-2